IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ राजेंद्र प्रसाद की राजनीतिक यात्रा: बिहार के विशेष संदर्भ में

शाहिल कुमार

शोधार्थी, इतिहास विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

प्रोफेसर डॉ. राजेश शुक्ला

इतिहास विभाग, कॉलेज ऑफ कॉमर्स आर्ट एंड साइंस, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

अमूर्त

भारतीय स्वतंत्रता की कहानी बीसवीं सदी की शुरुआत की है जब ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ आक्रोश ने बड़ा रूप लेना शुरू कर दिया था। भारतीय इतिहास उन नेताओं के बलिदान से भरा है जिन्होंने हमारे देश की आजादी के लिए लड़ने के लिए अपना स्थिर करियर और जीवन छोड़ दिया। उनके नेतृत्व और मार्गदर्शन ने स्वतंत्रता के बाद के युग में हमारे देश को स्वतंत्रता और उसके विकास की ओर अग्रसर किया है। वे नेता भले ही अब हमारे बीच नहीं हैं लेकिन हमारे स्वतंत्र देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में उनका काम और योगदान अभूतपूर्व है और हमेशा याद किया जाएगा।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद एक ऐसे नेता हैं जिनकी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उपस्थिति को भुलाया नहीं जा सकता। स्वतंत्रता आंदोलनों के दौरान उनका काम ब्रिटिश शासकों पर मजबूत दबाव बनाने में हमारे देश का एक बड़ा समर्थन था। देश के प्रति उनके शांतिपूर्ण और निरंतर समर्पण ने एक स्वतंत्र राष्ट्र की नींव रखी जो बेहतर भविष्य के लिए अपने पंख फैलाने के लिए तैयार था। यह पेपर स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता के बाद के प्रमुख राजनीतिक आंदोलनों में उनकी भूमिका के बारे में बात करेगा, जिन्होंने भारतीय राजनीतिक इतिहास में क्रांति ला दी।

कीवर्ड: भारतीय राजनीति, राजनीतिक नेता, भारत के राष्ट्रपति, राजनीतिक आंदोलन

परिचय

डॉ. राजेंद्र प्रसाद (1884-1963) स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति थे। उनका जन्म जीरादेई में हुआ था जो बिहार के सीवान जिले में पड़ता है। वह महात्मा गांधी के दाहिने हाथ थे और स्वतंत्रता संग्राम आंदोलनों का नेतृत्व किया। वह एक स्वतंत्र कार्यकर्ता, विद्वान, वकील थे और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी में अध्यक्ष पद पर थे। वह बिहार के एक प्रमुख नेता थे और देश की आजादी के लिए असहयोग आंदोलनों का हिस्सा थे। श्री प्रसाद स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश शासन के खिलाफ शुरू किये गये राजनीतिक आंदोलनों जैसे कि सत्याग्रह

और भारत छोड़ो आंदोलन का हिस्सा थे। उन्होंने पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ इन राजनीतिक आंदोलनों के लिए कुछ साल जेल में बिताए। लेकिन देश के लिए काम करने का उनका समर्पण और उत्साह कम नहीं हुआ डॉ. प्रसाद का पालन-पोषण एक मध्यम वर्गीय जमींदार परिवार में हुआ जहाँ शिक्षा को उच्च महत्व दिया जाता था। उन्होंने कानून में अपना करियर बनाया और कलकत्ता लॉ कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में कलकत्ता उच्च न्यायालय और फिर पटना उच्च न्यायालय में कानून का अभ्यास किया। वह कानून के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहे थे जब उन्हें ब्रिटिश शासन के तहत नील के बागानों में काम करने वाले किसानों की स्थिति में सुधार के लिए महात्मा गांधी के साथ काम करने की पेशकश की गई थी। उनके त्रुटिहीन प्रबंधन और ईमानदार समर्पण ने उन्हें भारत की स्वतंत्रता के दौरान गठित अंतरिम सरकार के दौरान खाद्य और कृषि मंत्री बनाया। बाद में उन्होंने हमारे देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए अपना कानून कैरियर और अभ्यास छोड़ दिया था। उनके बलिदान को पार्टी नेताओं ने अच्छी तरह से स्वीकार किया और सर्वसम्मति से उन्हें स्वतंत्र भारत का राष्ट्रपति चुना गया। डॉ. प्रसाद को उनके महान योगदान के लिए भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया गया। इसके बाद अपने बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण उन्होंने वर्ष 1962 में काम से संन्यास ले लिया।

भारत में औपनिवेशिक शासन का इतिहास

वर्ष 1858 में भारत कंपनी शासन के अधीन आ गया जिसे ब्रिटिश राज के नाम से भी जाना जाता था। ईस्ट इंडिया कंपनी ने वर्ष 1947 तक भारत पर शासन किया जब देश को ब्रिटिश शासकों से आजादी मिली। इससे पहले भारतीय राज्यों पर महाराजाओं का शासन था और वे रियासतों के नाम से जाने जाते थे।

विभिन्न राज्यों के अपने नेता द्वारा बनाए गए अलग-अलग नियम थे और यही एक मुख्य कारण था जिससे अंग्रेजों को भारत पर इतनी आसानी से शासन करने में मदद मिली। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी महारानी विक्टोरिया के अधीन थी, जिन्हें उस समय भारत की साम्राज्ञी कहा जाता था। स्वतंत्रता के बाद देश को दो संप्रभु राज्यों में विभाजित किया गया जिन्हें भारतीय गणराज्य और डोमिनियन ऑफ पाकिस्तान कहा जाता है। पाकिस्तान के दो हिस्से थे, जो पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान थे। पूर्वी पाकिस्तान बाद में अलग होकर बांग्लादेश कहलाया और पश्चिमी पाकिस्तान पाकिस्तान बन गया।

ब्रिटिश शासन ने भारत में संस्कृति, विचारधारा और बुनियादी ढांचे के संबंध में एक बड़ा बदलाव लाया था। अंग्रेजों ने भारतीय बुनियादी ढांचे में कुछ अच्छे बदलाव लाए और देश को नवीनतम उपलब्ध तकनीकों से परिचित कराया। यही वह दौर था जब एक आत्मनिर्भर देश को पश्चिमी दुनिया का एक्सपोज़र मिला। ब्रिटिश राज के तहत, कई स्कूल और कॉलेज बनाए गए और शैक्षणिक संस्थानों में अंग्रेजी भाषा पढ़ाई जाने लगी। कंपनी देश के लोगों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप और ब्रिटिश शासकों के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाने के लिए तैयार कर रही थी। शिक्षा, प्रौद्योगिकी और नीतियों के क्षेत्र में हुई प्रगति भारत के इतिहास के लिए कुछ स्वागत योग्य बदलाव थे, जिन्होंने निश्चित रूप से आज की सफलता और विकास का मार्ग प्रशस्त किया। पूरे औपनिवेशिक शासन में अशांति थी, लेकिन प्रमुख आंदोलन बीसवीं सदी के आरंभ में शुरू हुए।

स्वतंत्रता के लिए भारतीय राजनीतिक आंदोलन और डॉ. राजेंद्र प्रसाद की भूमिका

1857 के विद्रोह के बाद भारत में कंपनी शासन लागू हो गया और नियंत्रण इंग्लैंड की रानी को दे दिया गया। कंपनी ने देश का बारीकी से प्रबंधन किया और तभी से आक्रोश पनपने लगा और फिर हर भारतीय के लिए अपने देश को ब्रिटिश शासन से मुक्त देखना एक सपना बन गया। संघर्ष 1850 के दशक में शुरू हुआ जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी का गठन हुआ और नेताओं ने स्वतंत्र भारत की योजना बनानी शुरू की। यहां इस

अवधि के दौरान हुए प्रमुख आंदोलनों की सूची दी गई है जिसके कारण अंततः भारत को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन: 1860-1890 की अवधि के दौरान एक नया वर्ग उभर रहा था जो शिक्षित था और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा बनाई गई नीतियों पर सवाल उठा रहा था। इस अवधि के दौरान सत्तर लोग उठे और भारत पर ब्रिटिश शासन के प्रभाव पर चर्चा और बहस करने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की। उन्होंने पहचाना कि भारतीयों द्वारा भुगतान किए गए कर का उपयोग ब्रिटिश सिविल सेवकों को भुगतान करने के लिए किया जा रहा है और यह उनकी जीवनशैली को बनाए रखता है। उन्होंने कंपनी पर भारत का धन बर्बाद करने का आरोप लगाया। इस प्रदर्शन से आक्रोश पनपना शुरू हो गया था।

स्वदेशी आंदोलन: बीसवीं सदी की शुरुआत में मुस्लिम बहुल पूर्वी बंगाल और हिंदू बहुल पश्चिम बंगाल के बीच अशांति बढ़ी और बाद में बंगाल प्रांत विभाजित हो गया। बंगाल के विभाजन के बाद विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार हुआ और स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जिसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया। इस आंदोलन ने भारतीय निर्मित वस्तुओं के उपयोग का समर्थन किया और इसका इरादा देसी कारीगरों को सशक्त बनाना था। डॉ. प्रसाद ने महात्मा गांधी का दाहिना हाथ बनकर यहां अहम भूमिका निभाई

सत्याग्रह आंदोलन: बिहार के चंपारण जिले में शुरू हुए सत्याग्रह आंदोलन के दौरान डॉ. प्रसाद एक युवा कांग्रेस नेता के रूप में उभरे। वहां के किसानों को अपनी जमीन के एक हिस्से पर नील की खेती करने के लिए मजबूर किया गया और उन्हें अपनी फसल बाजार मूल्य से कम कीमत पर अंग्रेजों को बेचनी पड़ी। उस समय किसानों की हालत बहुत खराब थी और महात्मा गांधी ने इस क्षेत्र में काम करने के लिए डॉ. राजेंद्र प्रसाद को नियुक्त किया था। उन्होंने अपनी वकालत छोड़कर बिहार के किसानों के लिए काम करना शुरू कर दिया और इस क्षेत्र से एक मजबूत नेता के रूप में उभरे।

असहयोग आंदोलन: वर्ष 1920 में महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ असहयोग आंदोलन शुरू किया क्योंकि कंपनी पीछे हटने को तैयार नहीं थी। उन्होंने भारतीयों से अनुरोध किया कि वे कंपनी द्वारा दिये गये पुरस्कार और पद लौटा दें तथा सभी ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार करें। डॉ. प्रसाद ने इस आंदोलन के कार्यान्वयन में प्रमुख भूमिका निभाई और उनके लगातार प्रयासों ने कंपनी को योजना बनाने और देश को अपने औपनिवेशिक शासन से मुक्त करने के लिए मजबूर किया।

गोलमेज सम्मेलन और भारत सरकार अधिनियम: 1930 के दशक में, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने पूर्ण स्वराज की मांग की और डॉ. प्रसाद ने इस आंदोलन की अनुमति दी। पार्टी में ब्रिटिश राज से देश को पूरी तरह से आज़ादी दिलाने के लिए विचार-विमर्श हुआ।

भारत छोड़ो आंदोलन: 1942 में महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और डॉ. राजेंद्र प्रसाद के मार्गदर्शन में शुरू हुए इस आंदोलन ने हमारी भूमि से ब्रिटिश सेना की तत्काल वापसी की मांग की। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नेताओं द्वारा ब्रिटिश शासकों का बहिष्कार करने की जिद के कारण कंपनी पर दबाव बनने लगा और अंततः उन्होंने इस्तीफा दे दिया।

भारत की स्वतंत्रता और विभाजन: 15 अगस्त, 1947 को देश को आजादी मिली और मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में पाकिस्तान के डोमिनियन और जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत के डोमिनियन में विभाजित किया गया। सर्वसम्मत मतदान से डॉ. प्रसाद को राष्ट्रपति चुना गया और फिर उन्होंने देश के उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना शुरू कर दिया।

स्वतंत्रता के बाद के घटनाक्रम:

ब्रिटिश राज से हमारे देश की आजादी के बाद, देश के दृष्टिकोण को आकार देने में भारतीय नेताओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गई। पूरा देश उनकी ओर देख रहा था. डॉ. प्रसाद एक विद्वान और वकील थे और इस क्षेत्र में की जाने वाली संभावनाओं और कार्यों के बारे में बहुत जागरूक थे, जिससे किसानों को मदद मिल सकती थी और भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल सकता था। उन्होंने अपने ज्ञान का उपयोग किया और फिर बिहार में एक कृषि विश्वविद्यालय स्थापित करने में मदद की। विश्वविद्यालय अब विकसित हो चुका है और इसे डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय कहा जाता है जो अब पूसा, समस्तीपुर, बिहार में स्थित है। वह किसानों को उनकी खेती के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में जागरूकता प्राप्त करने में मदद करने के लिए ज्ञान केंद्र स्थापित करने में अग्रणी थे। बिहार के एक छोटे से जिले के मध्यम वर्गीय परिवार से आने वाले डॉ. प्रसाद किसानों की समस्याओं से खुद को जोड़ सकते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन भारतीय समाज के प्राथमिक क्षेत्र के अर्जक लोगों के बहुत करीब रहते हुए बिताया था और उन्होंने इस क्षेत्र में चुनौतियों और विकास को देखा है। वह जानता था कि इसमें विकास की कितनी गुंजाइश है और वह उस लक्ष्य को प्राप्त करने की संभावनाओं से अवगत था। उन्होंने कृषि क्षेत्र में गहरी जड़ें जमा चुकी समस्याओं को समझा और किसानों की खेती की उपज में सुधार करने में मदद करके उनकी स्थिति में सुधार करने के लिए इस क्षेत्र में काम करने के लिए दृढ़ संकल्प किया। वह हमारे देश के एक सुशिक्षित और सुविज्ञ नागरिक थे, जिन्हें आधुनिक और पारंपरिक दोनों समाजों का अनुभव था। वह चाहते थे कि दोनों एक-दूसरे के पूरक बनें। उनका मानना था कि परिवर्तन ही एकमात्र स्थिरांक है और हमें बदलते समय के साथ अपने काम की तकनीक में भी बदलाव करना चाहिए।

इसके बाद उन्होंने कृषि क्षेत्र में काम करने के लिए शिक्षित व्यक्तियों को तैयार करने के उद्देश्य से इस विश्वविद्यालय में कृषि में प्रमुख योगदान दिया। उनके प्रयास लंबे समय तक फलदायी रहे जब कृषि में स्नातकों ने इस क्षेत्र में काम करना शुरू किया और धीरे-धीरे इस क्षेत्र में सुधार लाया। श्री प्रसाद शिक्षा की ताकत को जानते थे और यह समझ चुके थे कि कृषि क्षेत्र में मौजूद सभी बाधाओं का मूल कारण मुख्य रूप से अशिक्षा है। उनका मानना था कि लोगों को कृषि के बारे में शिक्षित करने से इस क्षेत्र में व्यवस्थित विकास होगा और अंततः किसान अपनी खेती के तरीकों को विकसित करने के लिए सशक्त होंगे। वह किसानों की मौजूदा स्थिति को बेहतर बनाने के लिए तृतीयक क्षेत्र का समर्थन भी चाहते थे और बैंकिंग और ज्ञान केंद्र जैसी सेवाएं स्थापित करना चाहते थे जिससे किसानों को लंबे समय में मदद मिलती।

किसानों के लिए उनका दृष्टिकोण दीर्घकालिक था और वह हमारे देश में किसानों की बुनियादी समस्याओं पर उचित जमीनी काम किए बिना केवल नीतियां बनाने के बजाय जड़ों पर काम करना चाहते थे। उन्होंने न केवल प्राथमिक क्षेत्र के विकास पर काम किया, बल्कि तृतीयक क्षेत्रों में प्रगति करने के साथ-साथ इन दोनों क्षेत्रों को एक साथ काम करने और एक-दूसरे के लिए नौकरियां पैदा करने के लिए भी अंतर्दृष्टि प्रदान की। उनकी योजनाएँ सूखे और बाढ़ की संकटपूर्ण स्थितियों को हल करने में दीर्घकालिक और प्रभावी थीं, जहाँ किसान भारी समस्या में रहते थे। उनके संस्थान और केंद्र कृषि क्षेत्र के विकास के लिए लगातार काम कर रहे हैं और किसानों को धीरे-धीरे लेकिन लगातार आगे बढ़ने में मदद कर रहे हैं। हालाँकि इस दीर्घकालिक योजना का असर अभी भी जारी है और अब इस दिशा में और सुधारों की आवश्यकता होगी। लेकिन श्री प्रसाद द्वारा किये गये शुरुआती कार्यों ने विकास की नींव रखी और इस क्षेत्र में भविष्य में किये जाने वाले कार्यों के लिए एक क्रांतिकारी रास्ता तैयार किया है. [8]

निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता का संघर्ष दृढ़ता और दृढ़ता का एक अभूतपूर्व उदाहरण रहा है। हमारे राजनीतिक नेताओं द्वारा किए गए बलिदान ने हमारे स्वतंत्र देश के भविष्य को आकार दिया। इसने एक विकासशील देश के लिए रास्ता तैयार किया और एक नींव तैयार की, जो आज अन्य विकासशील देशों के बराबर है। हमारे देश की विशाल जनसंख्या और सांस्कृतिक विविधता हमारे राजनीतिक नेताओं के प्रयासों को याद करने को और भी गौरवशाली बनाती है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारतीय इतिहास की एक संपत्ति थे जिनके काम ने हमारे देश के भविष्य को परिभाषित किया है। उनके निरंतर प्रयासों ने भारतीय इतिहास में एक बड़ा बदलाव लाया और हमारे देश को ब्रिटिश शासन से आजादी दिलाई।

हमारा देश सदैव उनका ऋणी रहेगा और हम भविष्य में उनकी कार्यशैली से सीख लेंगे। भारतीय राजनीति में उनके बिना शर्त समर्थन को हमारे देश के लोगों ने स्वीकार किया है और उन्हें स्वतंत्रता के भारतीय इतिहास में हमेशा याद किया जाएगा। राजनीति में ऐसे नेताओं से बहुत कुछ सीखने को मिलता है जिन्होंने भारतीय राजनीति की दिशा बदल दी है और युवा पीढ़ी के राजनेताओं द्वारा सम्मान किए जाने और अनुसरण किए जाने के लिए एक परिपक्व बदलाव लाया है।

संदर्भ

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Rajender_Prasad

2. "प्रसाद राजेंद्र", एनसाइक्लोपीडिया, 2020, https://www.encyclopedia.com/people/history/south-asian-history-biographies/rajender-प्रसाद

3. "1942 भारत छोड़ो आंदोलन", मेकिंग ब्रिटेन, http://www.open.ac.uk/researchprojects/makingbritain/content/1942-quit-india-movement

4. "डॉ. राजेंद्र प्रसाद", सांस्कृतिक भारत, 2020, https://www.culturelindia.net/leaders/rajender-प्रसाद.html

5. "डॉ. राजेंद्र प्रसाद को उनकी 135वीं जयंती पर याद करते हुए", 2020, https://इकोनॉमिकटाइम्स.इंडियाटाइम्स.com/news/politics-and-nation/remembering-dr-rajender-प्रसाद-on-his-135th-birth -वर्षगांठ/भारत के पहले राष्ट्रपति/स्लाइड शो/72350369.cms

6. "डॉ. राजेंद्र प्रसाद", कांग्रेस, https://www.inc.in/en/leadership/past-party-President/rajender-प्रसाद

7. "राजेंद्र प्रसाद को याद करते हुए, जिन्होंने भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने में मदद की", एशियन एज, 2020, https://www.asianage.com/india/all-india/270220/remembering-rajender-प्रसाद-who-helped-draft-indias -constitution.html

8. "डॉ. राजेंद्र प्रसाद", सीवान एनआईसी, https://siwan.nic.in/dr-rajender-प्रसाद/

9. "नेशन रिमेम्बर्स डॉ. राजेंद्र प्रसाद", आउटलुक इंडिया, 2015, https://www.outlookindia.com/newswire/story/nation-remembers-dr-rajender-prasad/883454